ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 91-93
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- III, Issues-29, YEAR- July-Sept.-2023

सृष्टि उत्पत्ति : वेदान्त दर्शन एवं विज्ञान के आलोक में

स्मिता पटेल
शोध अध्येत्री– संस्कृत विभाग, फिरोज गान्धी कॉलेज, रायबरेली (उ0प्र0), भारत

Received-24.07.2023, Revised-30.07.2023, Accepted-05.08.2023 E-mail: psmita107@gmail.com

सारांशः ***ज्ञानचक्षु खुलने पर जब मानव ने प्रकृति के विभिन्न रूपों को देखा, तब वह आश्चर्य, रोमाञ्च और कौतुहल से भर गया तथा विचार करने लगा कि आखिर इस सृष्टि का कर्ता कौन है? उसी क्षण मानव मस्तिष्क में इस रहस्य को जानने की जिज्ञासा उत्पन्न हुई। सृष्टि की उत्पत्ति के सम्बन्ध में विभिन्न दार्शनिकों व वैज्ञानिकों ने अनेक परिकल्पनाएँ प्रस्तुत की। जहाँ एक ओर वेदान्त दर्शन सृष्टि की उत्पत्ति का मूल कारण पञ्चीकरण को मानता है और उसी से चौदह लोकों और स्थूल एवं सूक्ष्म शरीर की उत्पत्ति मानता है, वही दूसरी ओर वैज्ञानिक पृष्टभूमि का अवलोकन किया जाए तो इसकी उत्पत्ति महाविस्फोट से हुई है।***

सृष्टि उत्पत्ति का यह प्रश्न इतना गहरा और सूक्ष्म है कि उसे सुलझाना आज या कल का प्रश्न नहीं है, परन्तु वैज्ञानिकों और दार्शनिकों के द्वारा इसकी उत्पत्ति को बहुत ही सम्यक् रूप से समझाया गया और आशा है कि खगोलीय तकनीकि की उन्नति के कारण कुछ अनुत्तरित प्रश्नों के भी उत्तर शीघ्र ही प्राप्त हो जायेगें।

कुंजीभूत शब्द– ब्रह्म, ब्रह्माण्ड, सृष्टि–उत्पत्ति, महाविस्फोट, ज्ञानचक्षु, रोमाञ्चि, कौतुहल, जिज्ञासा, खगोलीय तकनीकि, परिवर्तनशील।

हम जिस संसार में रहते हैं उसका साक्षात् दर्शन व प्रत्यक्ष अनुभव करते हैं। हमारी प्रत्येक ज्ञानेन्द्रियाँ सृष्टि के प्रत्यक्ष एवं यथार्थ होने की पुष्टि करती है। इसीलिए इस सृष्टि के निर्माता के रूप में मानव मन ने ईश्वर, गाड, रचयिता, खुदा, कर्ता आदि अनेकानेक सृष्टि निर्माताओं की कल्पना की है। ब्रह्माण्ड, जगत, सृष्टि, संसार व जीवन की उत्पत्ति को जानना प्रत्येक मस्तिष्क का लक्ष्य बन गया। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए क्रमिक रूप से भौतिक उत्पत्ति, दार्शनिक उत्पत्ति एवं वैज्ञानिक उत्पत्ति की गाथा है।

सृष्टि परिकल्पना के सम्बन्ध में सर्वप्रथम यह विचार उत्पन्न होता है कि यह दृश्यमाण जगत् कहाँ से आया हैठ? किसने इसका निर्माण किया है? इस प्रकार की अनेकानेक जिज्ञासाएँ वेदों में भी दृष्टिगोचर होती है। ऐसी ही एक विश्वविख्यात् जिज्ञासा निम्नवत् हैः

को अद्धा वेद क इह प्रवोचत
कुत आजाता कुत इयं विसृष्टिः।
अर्वाग्देवा अस्य विसर्जने ना
अथा को वेद यत आबभूव।।[1]

वैदिक साहित्य के अनुसार इस चराचर जगत् का निर्माण एक विराट् पुरूष से हुआ है, वही इस सम्पूर्ण चराचर जड, चेतन से व्याप्त है, वही शाश्वत है और वही सकल पदार्थों एवं प्राणियों की उत्पत्ति का कारण है, वही समस्त विश्व की आत्मा का विराट शरीर है और उसी से पृथ्वी, आकाश, पवन, सूर्य, चन्द्र, मनुष्य, जन्तु तथा पार्थिव तत्त्वों की उत्पत्ति हुई है। "पुरूष एवेदं सर्व यद् भूतं यच्च भाव्यम्" ।[2]

यह निर्विवाद रूप से सर्वविदित है कि सम्पूर्ण सृष्टि पञ्चभौतिक है। यह सारा संसार क्षणभंगूर, मायामय है, अतएव मिथ्या है, क्योकि यह अस्थायी एवं परिवर्तनशील है। संसार की व्युत्पत्ति–"संसरति इति संसारः" अथवा जगत्– जगम्यते इति जगत। जो नष्ट होकर पुनः उत्पन्न होकर गतिशील हो वह जगत् है।

वैदिक साहित्य की तरह ही भारतीय दर्शन में जगत की उत्पत्ति का कारण कार्य एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त है। सृष्टि के रहस्यों का चिन्तन ही प्रकारान्तर से कारण कार्य सम्बन्धों का चिन्तन है। कारण एवं कार्य का सम्बन्ध शाश्वत है क्योंकि कारण के बिना कार्य की उत्पत्ति ही नहीं सम्भव है। वृक्ष की उत्पत्ति का कारण बीज है, वस्त्र की उत्पत्ति का कारण पट है।

वेदान्त दर्शन के परिप्रेक्ष्य में सृष्टि प्रक्रिया– सृष्टि रचना के कारण के सम्बन्ध में विविध दार्शनिकों ने अनेक विचार प्रस्तुत किए गए है। सांख्य दर्शन तथा वेदान्त दर्शन कारण में कार्य को सत् मानते है। इसके विपरीत न्याय एवम वैशेषिक दर्शन कारण में कार्य की सत्ता को अस्वीकार करते हैं। वेदान्त दर्शन के कारण कार्य सिद्धान्त की व्याख्या करने से पूर्व वेदान्ताभिमत सत्ता का विश्लेषण करना यहाँ परमावश्यक है। वेदान्त दर्शन सत्ता की तीन श्रेणियाँ मानता हैः–त्रिविधं सत्वम ।3

(1) प्रातिभासिक सत्ता– प्रातिभासिक सत्ता के अन्तर्गत क्षणिक विषय शामिल है। जैसे– भ्रम के कारण रज्जु में सर्प, शुक्ति में रजत के अस्तित्व का आभास है। प्रतीति काल में तो यह सत्य प्रतीत होता है, किन्तु उत्तरकाल में भ्रम समाप्त होने पर प्रातिभासिक स्वरूप बाधित हो जाता है।

(2) व्यावहारिक सत्ता– व्यावहारिक सत्ता के अन्तर्गत वे विषय आते है, जो व्यावहारिक रूप से सत् प्रतीत होता है, किन्तु ब्रह्मज्ञान होने पर यह भी बाधित हो जाता है। इस सत्ता के अन्तर्गत समस्त भौतिक पदार्थ, घट, पट आदि आते हैं।

(3) पारमार्थिक सत्ता– यह पारमार्थिक सत्ता पूर्णतः सत्य है, क्योंकि यह सर्वथा अपरिवर्तनशील है। यह सत्ता ब्रह्म की है।

वेदान्त दर्शन के अनुसार "सर्वं खल्विदं ब्रह्म" अर्थात् यह सम्पूर्ण संसार ब्रह्म ही है, इसके अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। इस

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- III, Issues-29, YEAR- July-Sept.-2023

दृष्टिगोचर जगत का उपादान एवं निमित्त कारण दोनों ही ब्रह्म ही है। वेदान्त दर्शन लूता के दृष्टान्त द्वारा शाश्वत ब्रह्म, जगत का उपादान एवं निमित्त कारण दोनों ही वही परमब्रह्म है। जिस तरह मकडी जब इच्छा करती है तब अपने मुँह से एक पतला– सा धागा उगलती हुई ताना– बाना बनाकर जाल बना डालती है और जब चाहती है तब उसे समेटकर उसके सहारे ही ऊपर चढ़ जाती है। उसी तरह ब्रह्म अपनी चेतनता के कारण समस्त जड–जंगम जगत् का निमित्त कारण है और माया(अज्ञान की उपाधि) के कारण उपादान कारण है।

"शक्तिद्वयवदज्ञानोपहितं चौतन्यं स्वप्रधानतया निमित्त स्वोपाधिप्रधानतयोपादानं च भवति। यथा लूता तन्तुकार्यं प्रति स्वप्रधानता निमित्तं स्वशरीरप्रधानतयोपादानं च भवति"।[4]

अद्वैत वेदान्त के आचार्य शंकर ने माया की दो शक्तियाँ मानी है:– आवरण एवं विक्षेप। आवरण शक्ति वास्तविकता को ढकने का कार्य करती है, एवं अनिर्वचनीय, अव्यक्त, माया नामक विक्षेप शक्ति द्वारा इस सृष्टि की रचना करता है। इन दोनों ही शक्तियों के कारण मनुष्य सांसारिक जाल में बन्धकर भ्रमण करता रहता है:–

"एताभ्यामेव शक्तियां बन्धः पुंसः समागतः।
याभ्यां विमोहितो देहं मत्वात्मानं भ्रमत्ययम्"।।[5]

इसी विक्षेप शक्ति से युक्त अज्ञानोपहित चौतन्य से आकाश, आकाश से वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से जल और जल से पृथिवी उत्पन्न होती है। इनमें शब्द, स्पर्श, उष्णत्व, रस, तथा गन्ध यह पाँचों गुण नैसर्गिक रूप से विद्यमान रहते हैं। यह तत्त्व सूक्ष्मरूप हैं, इन्हें तन्मात्र कहते है, यह अपचीकृत हैं। वेदान्त दर्शन पंचीकरण प्रक्रिया द्वारा आकाशादि तन्मात्राओ के संयोग से स्थूल महाभूतों की उत्पत्ति मानता है। पंचीकरण की प्रक्रिया में सर्वप्रथम आकाशादि पञ्चमहाभूतों में से प्रत्येक को दो बराबर भागों में बाटकर पुनः अर्धांश को चार भागों में विभक्त किया जाता है। अब प्रत्येक अर्धांश को अन्य चार भागों के अष्टमांश से जोडने पर वे स्थूलीकृत महाभूत पंचभूतों वाले हो जाते है:–

"पंचीकरणं त्वाकाशादिपञ्चस्वेकैकं द्विधा समं विभज्य तेषु दशसु भागेषु प्राथमिकान् पञ्च भागान् प्रत्येकं चतुर्धा समं विभज्य तेषां चतुर्णां भागानां स्वस्वद्वितीयार्धभागपरित्यागेन भागान्तरेषु संयोजनम्"।[6]

"द्विधा विधाय चौकैकं चतुर्धा प्रथमं पुनः।
स्वस्वेतर द्वितीयांशैर्योजनात् पञ्च पञ्च ते"।।[7]

इन पंचीकृत भूतों से क्रमशः ऊपर विद्यमान भू, भुवः, स्वः, महः, जनः, तपः तथा सत्यम् नाम वाले लोक और क्रमशः नीचे के ओर स्थित अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल और पाताल नाम वाले लोक सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड और उसके मध्य रहने वाले चार तरह के स्थूल शरीर तथा उन स्थूल शरीरों के योग्य अन्न–जल की उत्पत्ति होती है।

विज्ञान के परिप्रेक्ष्य में सृष्टि–प्रक्रियाः– आधुनिक विज्ञान हो या पुरा वैदिक विज्ञान सृष्टिब्रह्माण्ड की उत्पत्ति के प्रश्न का उत्तर खोजना सबका चरम लक्ष्य है। आधुनिक विज्ञान की मान्यता के अनुसार सृष्टि की उत्पत्ति के सम्बन्ध में अनेकानेक सिद्धान्त प्रचलित है, जिसमें से मुख्यतया तीन सिद्धान्त[8] प्रचलित है–

(1) बिंग बैंग सिद्धान्त– जार्ज लेमैत्र
(2) साम्यावस्था सिद्धान्त– थॉमस गोल्ड, फ्रेड होयल एवं हर्मन बॉडी
(3) दोलन सिद्धान्त– डॉ. एलन संडेजा

बिंग बैंग सिद्धान्त(महाविस्फोट सिद्धान्त) संसार की उत्पत्ति से सम्बन्धित सिद्धान्तों में सबसे प्रसिद्ध एवं प्रमुख सिद्धान्त है। इसे 'विस्तारित ब्रह्माण्ड परिकल्पना'[9] भी कहा जाता है। इस सिद्धान्त के अनुसार ब्रह्माण्ड लगभग 13.7 अरब पूर्व भारी पदार्थों से निर्मित एक गोलाकार पिण्ड था। बिंग बैंग की प्रक्रिया में इसके अन्दर महाविस्फोट हुआ और ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति हुई, जिसके फलस्वरूप अनेक पिण्ड अन्तरिक्ष में विखर गए जो आज भी गतिशील अवस्था में विद्यमान है। कुछ अरब वर्षोपरान्त हाइड्रोजन एवं हीलियम के बादल संकुलित होकर तारों एवं आकाशगंगा का निर्माण करने लगे।

इस घटना के पश्चात् आज से लगभग 4.5 अरब पूर्व सौरमण्डल का विकास हुआ। जिससे ग्रहों एवं उपग्रहों का निर्माण हुआ। इन्हीं ग्रहों में से पृथ्वी ही एक मात्र ऐसा ग्रह है जिस पर जीवन का अस्तित्व है।

साम्यावस्था सिद्धान्त का प्रतिपादन हॉयल ने सन् 1948[10] में की। जिसे स्थिर अवस्था संकल्पना के रूप मे प्रस्तुत किया। इस परिकल्पना के अनुसार आकाशगंगाएँ आपस में दूर हो रही है, परन्तु आकाश में घनत्व अपरिवर्तित रहता है। इसका तात्पर्य यह है कि आकाशगंगाओं के एक दूसरे से दूर जाने पर उसका स्थान नयी आकाशगंगाएं ले लेती है, जिससे साम्यावस्था की स्थिति बनी रहती है।

इसके अतिरिक्त डॉ संडेज का कथन है कि आज से लगभग 128 करोड वर्ष पूर्व भयानक विस्फोट हुआ तब से यह विश्व विस्तृत होता जा रहा है, कुछ समय पश्चात् पदार्थ का सिकुडन आरम्भ हो जायेगा। उसके पश्चात् इसमें इसमें अन्त–विस्फोट होगा।

आज के इस भौतिकतावादी युग में सृष्टि कैसे बनी है+? इसका निर्माण ब्रह्म ने किया या विज्ञान के मतानुसार विस्फोट से बनी है यह मानना अतिमहत्वपूर्ण है, क्योंकि अगर हम यह मान लेगें कि यह सब केवल एक संयोग है, ब्रह्म, ईश्वर, गाड, खुदा कुछ नहीं, मनुष्य सब करने में समर्थ है, तो मानव में अहंभाव जाग्रत हो जायेगा और यही अहंभाव सारे द्वन्द, द्वेष व पतन का मूल होगा, किन्तु अगर हम यह माने कि सर्वनियामक ब्रह्म, ईश्वर इत्यादि हैं, जो हमारे सारे कर्मों को देखता है तो अहंभाव तिरोहित रहेगा और मानव वसुधैव कुटुम्बकम् के भाव से परस्पर प्रेम, त्याग, बन्धुता से रहेगा। इसीलिए आज आवश्यकता इस बात की है कि भारतीय शास्त्रों के

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- III, Issues-29, YEAR- July-Sept.-2023

संकेतों को ध्यान में रखकर वैज्ञानिक खोज की जाए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. नासदीय सूक्त 10/129/6.
2. पुरूष सूक्त 10/90/2.
3. सर्वदर्शन संग्रह।
4. वेदान्तसार।
5. विवेक चूडामणि 146.
6. वेदान्तसार।
7. पञ्चदशी 1/26.
8. विश्व का भूगोलःदबमतज।
9. भौतिक भूगोल के मूल सिद्धान्त।
10. विज्ञान,मानव और ब्रह्माण्ड– डॉ. जयन्त विष्णु नार्लीकर।

*****